शिवशक्ति सरस्वती माँ

34. हफ्ते में एक बार हम सुप्रीम पार्टी वाले मम्मा के साथ बैठकर अमृतवेले योग करते थे। जब मम्मा चाँदनी में बैठ योग करती थीं तो हम भी जाकर एक-एक कोने में बैठ योग करते थे। कभी-कभी मम्मा को ही अपने ग्रुप में बुलाते थे और मम्मा 3.30 से 4 बजे तक हम सबको योग कराती थीं। जब मम्मा के सामने बैठ हम योग करते थे तो हमें ज्ञान-चन्द्र माँ के शीतल प्रकम्पनों से शान्तिधाम का अनुभव होता था।

35. मम्मा अमृतवेले दो बजे उठकर अकेले में योग करती थीं। वह साढे तीन बजे तैयार होकर बाहर आती थीं। चार बजे से पाँच बजे तक सामूहिक योग होता था, उसमें मम्मा अवश्य आती थीं। उसके बाद स्नान आदि नित्यकर्म पूरा करती थीं। नाश्ते के बाद 9 बजे प्रातः मुरली क्लास होती थी, उसमें आती थीं। उसके बाद एक-एक दिन एक-एक बहन को संदली पर बिठाकर ज्ञान की कोई-न-कोई प्वाइंट पर समझाने के लिए कहती थीं। इस प्रकार मम्मा सबको भाषण करना, क्लास कराना सिखाती थीं। उसके बाद सेवा करते थे। दोपहर के भोजन के बाद विश्राम होता था। मम्मा 5 बजे ऑफिस में बैठती थीं और यज्ञवत्सों को टोली खिलाती थीं। जब हमें कभी-कभी मम्मा से टोली खाने का मन होता था तो हम वहाँ जाकर मम्मा से टोली लेते थे। बाद में मम्मा ऑफिस का कामकाज़ देखती थीं। रात्रि भोजन के बाद मम्मा कचहरी कराती थीं।

36. मम्मा का शुरू से ही अव्यक्त और फ़रिश्ता रूप था। हमारा पुरुषार्थ प्रोग्राम प्रमाण होता है परन्तु मम्मा का पुरुषार्थ नैचुरल था, सहज रीति का था। इसलिए उन्होंने सहज रूप से सम्पूर्णता को प्राप्त किया।

37. मम्मा के अव्यक्त होने के बाद उनकी पूजा अर्थात् जगदम्बा की, दुर्गा की पूजा बहुत ज़्यादा बढ़ी है। अव्यक्त रूप में मम्मा दुर्गा का पार्ट बजा रही है, इसके कारण दुर्गा की पूजा और अर्चना बहुत-बहुत हो रही है। कलकत्ते में तो देखने वाला दृश्य होता है कि दुर्गा पूजा क्या होती है! हमें तो महसूस होता है कि जब मम्मा साकार में थीं तब ज्ञान-ज्ञानेश्वरी बन ज्ञान की गंगा बहायीं और अव्यक्त होने के बाद दुर्गा का पूरा-पूरा पार्ट बजा कर भक्तों को गुण और शक्तियों का वरदान दे रही हैं।